श्री गुरु कृपा श्री गिरिराज कृपा श्रीनृःसिंह कृपा

श्री गिरिराज ज्योति

श्री बटुक भैरव अष्टोत्तर नामावली

ह्रीँ

प्रातः स्मरणीय सद्गुरुदेव
श्री श्री 1008 श्री हरे राम बाबा जी
के श्री चरणों में जनकल्याणार्थ
सादर समर्पित.....

श्री बटुक भैरव–यंत्र

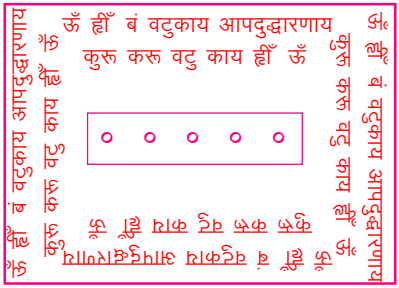

पं0 कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
(श्री नृःसिंह उपासक/रमल रमलाचार्य)
स्वर्ण पदक से अलंकृत/संपादक
संस्थापक– श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड
सलाहाकार ABI अमेरिका

प्रकाशक

श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान
मंदिर श्री नृःसिंह भगवान, चकलेश्वर रोड, गोवर्धन
Ph. No. - 09760689730 --- 0 941226020
E Mail- ramal_jyotish@yahoo.co.in
navgrahvatika@gmail.com

(मंगल, शनि, राहु–केतु की दशा, अन्तर्दशा, अनेक आपत्तियों, कष्टों, किसी कार्य तके बाधा, असाध्य कार्यो के अवसर पर अभीष्ट फल प्राप्ति के लिये अचूक अनुभव सिद्ध श्री भैरव प्रयोग)

(1) विनियोग :– ऊँ अस्य श्री बटुक भैरव नामाष्टशतकस्य आपदुद्धारण–स्त्रोत मंत्रस्य बृहदारण्य को नाम ऋषिः, श्री बटुक भैरवो देवता, अनुष्टुप छन्दः, ह्रीँ बीजम्, बटुकायेति शक्तिः, प्रणवः कीलकम्, आपदुद्धारणार्थे, मम अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे/पाठे विनियोगः।। (हाथ में जल लेकर पृथ्वी पर छोड़ें)

(2) अथ अङंग्यास :–
ऊँ ह्रां बाँ हृदयाय नमः।
ऊँ ह्री ँ बी ँ शिरसे स्वाहा।
ऊँ ह्रूँ बूँ शिखायै वषट्।
ऊँ ह्रै ँ बै ँ कवचाय हुम्।
ऊँ ह्रौ ँ बौ ँ नेत्रत्रयाय वौषट्।
ऊँ ह्रः बः अस्त्राय फट्।

(3) अथ करन्यास :–
ऊँ ह्रां बाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ऊँ ह्री ँ बी तर्जनीभ्यां नमः।
ऊँ ह्रूँ बूँ मध्यमाभ्यां नमः।
ऊँ ह्रै ँ बै ँ अनामिकाभ्यां नमः।
ऊँ ह्रौ ँ बौ ँ कनिष्ठाभ्यां नमः।
ऊँ ह्रः बः करतल करपृष्ठाभ्याम् नमः।

(4) अथ नामाग्ड़न्यास :–
ऊँ ह्री ँ भूतनाथाय नमः हृदयाय नमः।।
ऊँ ह्री ँ अदिनाथाय नम शिरसे स्वाहा।।
ऊँ ह्री ँ आनन्दनाथाय नमः शिखायै वषट्।।
ऊँ ह्री ँ सिद्धसावर नाथाय नमः कवचाय हुम्।।
ऊँ ह्री ँ सहजानन्दनाथाय नमः नेत्रत्राय वौषट्।।
ऊँ ह्री ँ परमानन्द नाथाय नम अस्त्राय फट्।।

(5) मानस पूजनम् :–
ऊँ लँ पृथ्व्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। श्री बटुक भैरवाय नमः।
ऊँ हँ आकाशत्मकं पुष्पं समर्पयामि। श्री बटुक भैरवाय नमः।
ऊँ यँ वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि। श्री बटुक भैरवाय नमः।
ऊँ रँ वह्नयात्मकं दीपं दर्शयामि। श्री बटुक भैरवाय नमः।
ऊँ वँ अमृतात्मकं नैवेद्य निवेदयामि। श्री बटुक भैरवाय नमः।
ऊँ सँ सर्वात्मकं सर्वोपचारान् समर्पयामि। श्री बटुक भैरवाय नमः।

(6) ध्यानम्:–
ऊँ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्,
तरूण–तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती।।
ऋतुसमय सपर्या विध्नविच्छह हेतुर्जयति,
जयति बटुकनाथः सिद्धिः साधकानाम्।।

(7) नमस्कार मन्त्र :– 'ऊँ ह्रां ह्रौ ँ नमः शिवाय'.....11 बार जप करें।

(8) अथ नमस्कार–मंत्र

1. ऊँ ह्रीं भैरवाय नमः।
2. ऊँ ह्रीं भूतनाथाय नमः।
3. ऊँ ह्रीं भूतात्मने नमः।
4. ऊँ ह्रीं भूतभावनाय नमः।
5. ऊँ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः।
6. ऊँ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः।
7. ऊँ ह्रीं क्षेत्रदाय नमः।
8. ऊँ ह्रीं क्षत्रियाय नमः।
9. ऊँ ह्रीं विराजे नमः।
10. ऊँ ह्रीं शमशानवासिने नमः।
11. ऊँ ह्रीं माँसाशिने नमः।
12. ऊँ ह्रीं खर्पराशिने नमः।
13. ऊँ ह्रीं स्मरान्तकाय नमः।
14. ऊँ ह्रीं रक्तपाय नमः।
15. ऊँ ह्रीं पानपाय नमः।
16. ऊँ ह्रीं सिद्धाय नमः।
17. ऊँ ह्रीं सिद्धिदाय नमः।
18. ऊँ ह्रीं सिद्धिसेविताय नमः।
19. ऊँ ह्रीं कंकालकामशमनाय नमः।
20. ऊँ ह्रीं कालकाष्ठाय नमः।
21. ऊँ ह्रीं तनये नमः।
22. ऊँ ह्रीं कवये नमः।
23. ऊँ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः।
24. ऊँ ह्रीं वहुनेत्राय नमः।
25. ऊँ ह्रीं पिंगललोचनायः नमः।
26. ऊँ ह्रीं शूलपाणये नमः।
27. ऊँ ह्रीं खंगपाणये नमः।
28. ऊँ ह्रीं कंकालाय नमः।
29. ऊँ ह्रीं धूम्रलोचनाय नमः।
30. ऊँ ह्रीं अभीरवे नमः।
31. ऊँ ह्रीं भैरवीनाथाय नमः।
32. ऊँ ह्रीं भूतपाय नमः।
33. ऊँ ह्रीं योगनीपतिये नमः।
34. ऊँ ह्रीं धनदाय नमः।
35. ऊँ ह्रीं धनहारिणे नमः।
36. ऊँ ह्रीं धनवते नमः।।
37. ऊँ ह्रीं प्रतिभानवते नमः।
38. ऊँ ह्रीं नागहाराय नमः।
39. ऊँ ह्रीं नागपाशाय नमः।
40. ऊँ ह्रीं व्योमकेशाय नमः।
41. ऊँ ह्रीं कपालभृते नमः।
42. ऊँ ह्रीं कालाय नमः।।
43. ऊँ ह्रीं कपालमालिने नमः।
44. ऊँ ह्रीं कमनीयाय नमः।
45. ऊँ ह्रीं कलानिधये नमः।
46. ऊँ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः।
47. ऊँ ह्रीं ज्वलन्नेत्राय नमः।
48. ऊँ ह्रीं त्रिशिखने नमः।
49. ऊँ ह्रीं त्रिलोकपाय नमः।
50. ऊँ ह्रीं त्रिनेततनयाय नमः।
51. ऊँ ह्रीं डिम्भाय नमः।
52. ऊँ ह्रीं शान्ताय नमः।
53. ऊँ ह्रीं शान्तजनप्रियाय नमः।
54. ऊँ ह्रीं बटुकाय नमः।
55. ऊँ ह्रीं वहुवेशाय नमः।
56. ऊँ ह्रीं खट्वागंवरधारकाय नमः।
57. ऊँ ह्रीं भूताध्यक्षाय नमः।
58. ऊँ ह्रीं पशुपतये नमः।
59. ऊँ ह्रीं भिक्षुकाय नमः।
60. ऊँ ह्रीं परिचारकाय नमः।
61. ऊँ ह्रीं धूर्ताय नमः।।
62. ऊँ ह्रीं दिगम्बराय नमः।
63. ऊँ ह्रीं शौरये नमः।
64. ऊँ ह्रीं हरिणाय नमः।

65. ऊँ ह्रीं पाण्डुलोचनाय नमः।
66. ऊँ ह्रीं प्रशान्ताय नमः।
67. ऊँ ह्रीं शान्तिदाय नमः।
68. ऊँ ह्रीं शुद्धाय नमः।
69. ऊँ ह्रीं शंकरप्रियवान्धवाय नमः।
70. ऊँ ह्रीं अष्टमूर्तये नमः।
71. ऊँ ह्रीं निधीशाय नमः।
72. ऊँ ह्रीं ज्ञानचक्षुसे नमः।
73. ऊँ ह्रीं तपोमयाय नमः।
74. ऊँ ह्रीं अष्टाधाराय नमः।
75. ऊँ ह्रीं षडाधाराय नमः।
76. ऊँ ह्रीं सर्पयुक्ताय नमः।
77. ऊँ ह्रीं शिखिसखाय नमः।
78. ऊँ ह्रीं भूधराय नमः।
79. ऊँ ह्रीं भूधराधीशाय नमः।
80. ऊँ ह्रीं भूपतये नमः।।
81. ऊँ ह्रीं भूधरात्मजाय नमः।
82. ऊँ ह्रीं कंकालधारिणे नमः।
83. ऊँ ह्रीं मुण्डिने नमः।
84. ऊँ ह्रीं नागयज्ञोपवीताय नमः।
85. ऊँ ह्रीं जृम्भणाय नमः।
86. ऊँ ह्रीं मोहनाय नमः।
87. ऊँ ह्रीं स्तम्भिने नमः।
88. ऊँ ह्रीं मारणाय नमः।
89. ऊँ ह्रीं क्षोभणाय नमः।
90. ऊँ ह्रीं नीलाञ्जनप्रख्याय नमः।
91. ऊँ ह्रीं दैत्यघ्ने नमः।
92. ऊँ ह्रीं मुण्डभूषताय नमः।
93. ऊँ ह्रीं बलिभुजे नमः।
94. ऊँ ह्रीं बलिभुङ्नाथाय नमः।
95. ऊँ ह्रीं बालाय नमः।
96. ऊँ ह्रीं बालपराक्रमाय नमः।
97. ऊँ ह्रीं सर्वापत्तारणाय नमः।
98. ऊँ ह्रीं दुर्गाय नमः।
99. ऊँ ह्रीं दुष्टभूतनिषेविताय नमः।
100. ऊँ ह्रीं कामिने नमः।
101. ऊँ ह्रीं निधये नमः।
102. ऊँ ह्रीं कान्ताय नमः।
103. ऊँ ह्रीं कामिनीवशकृते नमः।
104. ऊँ ह्रीं वशिने नमः।
105. ऊँ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय नमः।
106. ऊँ ह्रीं वैद्याय नमः।
107. ऊँ ह्रीं प्रभवे नमः।
108. ऊँ ह्रीं विष्णवे नमः।

(प्रति दिन 11 पाठ करें)

(9) अथ उत्तर नामांगन्यासाः

ऊँ ह्रीं भूतनाथाय नमः हृदयाय नमः।
ऊँ ह्रीं आदिनाथाय नमः शिरसे स्वाहा।
ऊँ ह्रीं आनन्दनाथाय नमः शिखायै वषट्।
ऊँ ह्रीं सिद्धसावरनाथाय नमः कवचाय हुम्।
ऊँ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः नेत्रयाय वौषट्।
ऊँ ह्रीं परमानन्दनाथाय नमः अस्त्राय फट्।

(10) जपार्थ मन्त्र

ऊँ ह्रीं बं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरू कुरू बटुकाय ह्रीं। 121 बार।

विधिः— श्री भैरव यंत्र को सफेद कागज पर लाल चंदन अथवा लाल स्याही से लिखकर, प्राण प्रतिष्ठा करके लाल आसन पर पूजा में सम्मुख स्थापित करके इस शतमष्टोत्तर पाठ के 1331 जप करने से शीघ्र ही कार्य की सिद्धि होती है। यह क्रिया रात्रि 9 बजे बाद करने से तत्काल फल देती है। जो प्रसाद लगावें, उसे कुत्ते को खिला देना चाहिये। अन्य किसी को अथवा स्वयं नहीं खाना चाहिये। मंगलवार को प्रारम्भ करे, दक्षिण मुख। लाल कपड़ा पहनकर, लाल आसन पर जप करें, भोग में गुड़ की ढेली और एक गिलास पानी रखें तथा कड़वे तेल का दीपक एवं धूपादि जलायें।